RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 April 2020, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd April 2020

मासिक पत्रिका

अजायब ❁ बानी

वर्ष–सत्रहवां | अंक–बारहवां | अप्रैल–2020

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
5 **सच्ची खोज**

कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
19 **हुजूर सावन सिंह जी महाराज की याद में**

महाराज सावन सिंह जी के मुखारविंद से
13 **अनमोल वचन**

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
25 **सच और झूठ**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस–1, नई दिल्ली–110 028 से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01

विशेष सलाहकार – **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक – **नन्दनी**
सहयोग – **परमजीत सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 217 Website : www.ajaibbani.org

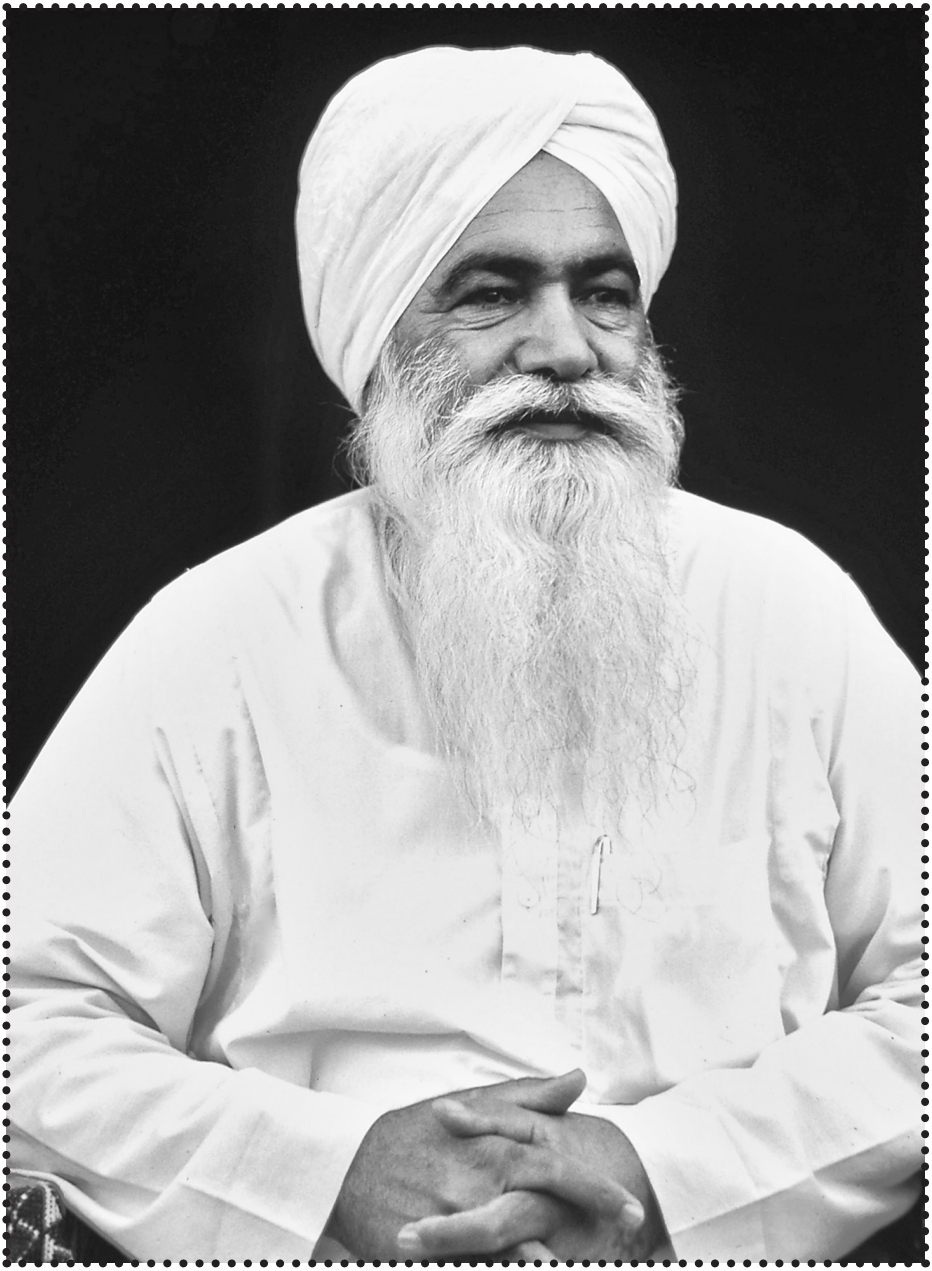

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

स्वामी जी महाराज
की बानी

5 दिसम्बर 1987

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सच्ची खोज

16 पी. एस. आश्रम, राजस्थान DVD- 536 (2)

सतगुरु खोजो री प्यारी। जगत में दुर्लभ रतन यही।।
जिन पर मेहर दया सतगुरु की। उनको दर्श दई।।

आपके आगे स्वामी जी महाराज का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनने वाला है। सन्त–महात्माओं की बानी इज्जत और प्यार के काबिल होती है। हर युग में बानी परमार्थ के अभिलाषियों के लिए सही साबित होती है, सही मार्गदर्शन करती है।

हमारी आत्मा परमात्मा की अंश है। आत्मा जब से परमात्मा से बिछुड़ी है इसका झुकाव परमात्मा की तरफ ही रहता है क्योंकि अंशा–अंशी सम्बंध होता है। हम जानते हैं कि दुनिया की खोज करने में किसी ने कोई कसर नहीं छोड़ी। समुंद्रों की गहराई की खोज की, आसमान की खोज की, पहाड़ों की खोज की। उन लोगों ने बहुत कठिन परिश्रम किया और अपना तजुर्बा किताबों में दर्ज कर दिया।

हम खोज करने वालों की किताबें पढ़ते हैं तो हमारे अंदर भी उनकी तरह खोज करने का उत्साह पैदा होता है। वैज्ञानिकों की खोज से लोगों को बहुत फायदे हुए लेकिन खोज करते–करते इंसान अपनी तबाही पर पहुँच गया है। आज दुनिया की महाशक्तियाँ यह अभिमान करती हैं कि हमारे पास इस किस्म के बम हैं कि हम जब चाहें मिनटो–सैकिंडो में दुनिया को तबाह कर सकते हैं लेकिन इतनी खोज करने के बावजूद इतने साधन होने के बावजूद आज का इंसान खुश नजर नहीं आता। सच्चाई तो यह है कि आज इंसान पहले से भी ज्यादा अशांत है।

दूसरी तरफ हम सन्त–महात्माओं के लिखे हुए धर्मग्रंथ पढ़ते हैं, उनकी खोज भी बहुत भरपूर और सराहनीय है। सन्त कहते हैं कि संसार में इंसान का जामा प्राप्त करके कौन सी चीज खोजने वाली है? वह परमात्मा और सतगुरु है। हम परमात्मा से सीधे नहीं मिल सकते उसे खोज नहीं सकते। हमें पता नहीं कि परमात्मा किस तरीके से मिलता है? इस रास्ते पर हम पाँच साल के बच्चे से भी ज्यादा अंजान हैं। सन्त हमें यह जानकारी देते हैं कि आप उस सतगुरु को खोजें जिसने अपनी जिंदगी में खोज मुकम्मल कर ली है, वह आपको बताएगा कि आप किस तरीके से परमात्मा को मिल सकते हैं।

बाबा जयमल सिंह जी कहा करते थे, ''अगर सच्ची खोज करते हुए चाहे हमारा शरीर भी क्यों न छूट जाए तब भी हम इंसानी जामें से नीचे नहीं जाते क्योंकि हम पूरे सतगुरु की खोज में लगे हुए हैं। जब खोज कर ली, नाम मिल गया फिर उस रास्ते से भटक जाना हमारी जिंदगी की सबसे बड़ी गलती है।''

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''भूखे को रोटी प्यासे को पानी कुदरत का उसूल है जरुर देती है।'' महात्मा हमें बताते हैं अगर आप परमात्मा को पुकारेंगे तो वह जरुर मिलेगा, खोजेंगे तो वह जरुर आपकी आशा पूरी करेगा। जिस तरह माता को अपने बच्चे प्यारे होते हैं उसी तरह परमात्मा को अपने भक्त प्यारे होते हैं। परमात्मा जानता है कि इसे किस चीज की खोज है किस चीज की तड़प है फिर वह अपनी दया करता है और सतगुरु के जरिए शब्द–रूप होकर हमें दर्शन देता है। परमात्मा ने महात्माओं को यह जिम्मेवारी सौंपी होती है कि किन आत्माओं को नाम देना है किन्हें परमात्मा के रास्ते पर डालना है। चाहे महात्मा खुद उनके पास जाएं या उन्हें अंदर से ही प्रेरित करें। पलटू साहब कहते हैं:

उन्हें क्या है चाह, फिरत हैं मुल्क बथेरा।
जीव तारन कारणें, सेहंदे दुःख घनेरा।।

सन्तों की क्या चाहना होती है? उन्होंने बाहर मान–बड़ाई प्राप्त करने के लिए नहीं जाना होता। दुनिया का कोई साधन जुटाने के लिए नहीं जाना होता, उनका मतलब कोई भी दुनियावी फायदा उठाना नहीं होता। सन्त जीवों की खाातिर बहुत मुल्कों में घूमते हैं, दुःख सहते हैं, लम्बी–लम्बी यात्राएं करते हैं, रातों को जागते है और सोई हुई आत्माओं को जगाकर परमात्मा के साथ जोड़ते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्त अपना स्टाफ साथ ही लेकर आते हैं कि किससे क्या काम लेना है, उन्हें अंदरुनी ज्ञान होता है। सन्त अपने सेवकों की भी ड्यूटी लगाते हैं कि आपने किन–किन आत्माओं को अंदर से प्रेरित करना है। सतसंगी के ऊपर भी जिम्मेवारी आती है कि वह उदाहरण बनकर दूसरों के सामने पेश आए ताकि जो आत्माएं अभी परमात्मा के साथ नहीं जुड़ी वे भी उनसे फायदा उठाएं।''

हर आत्मा का वक्त मुकर्र होता है। अमरदेव जी गुरु अंगद साहब से बहुत थोड़े फासले पर रह रहे थे। अमरदेव जी गोईंदवाल में रह रहे थे और गुरु अंगददेव जी खंडूर साहब में रह रहे थे लेकिन उनका आपस में मिलाप नहीं हुआ था। उस वक्त अमरदेव जी बाईस दफा हरिद्वार गए। उस समय आने–जाने के साधन नहीं थे। उस समय हमारे इलाके पंजाब से जो हरिद्वार जाता था लोग उसके लिए रो लेते थे कि पता नहीं यह जंगलों में जानवरों का खाज बनेगा, वापिस आएगा या नहीं? ऐसे बिखड़े वक्त में अमरदेव जी ने बाईस बार गंगा की यात्रा की।

बेशक आज हिन्दुस्तान के बड़े शहरों में पश्चिम के रिवाज आ गए हैं लेकिन गांव की जनता तो अभी भी पिछले रस्मों–रिवाज में है। लड़की वाले जिस घर में अपनी लड़की की शादी करते हैं वह उस घर की तहकीकात करते हैं कि लड़के की क्या जाति है, वह क्या कारोबार करता है और उसके पास कितनी संपत्ति है? गुरु अंगददेव जी की लड़की

अमरदेव जी के भाई के लड़के के साथ ब्याही गई थी। क्या आपने खोज नहीं की थी कि मेरा समधी भगवान से मिला हुआ है? लेकिन अभी समय नहीं आया था इसलिए वे गुरु अंगददेव जी को पहचान नहीं सके।

अमरदेव जी जब आखिरी बार हरिद्वार गए तब उनका मिलाप ब्रह्मचारी के साथ हुआ। ब्रह्मचारी सारी रात अमरदेव जी से बातें करता रहा। उन दोनों ने भोजन किया। ब्रह्मचारी ने बातों–बातों में अमरदेव जी से पूछा, ''यार अमर तेरा गुरु कौन है?'' अमरदेव जी का कोई गुरु नहीं था। ब्रह्मचारी ने कहा, ''मुझे बहुत अफसोस है कि मैंने निगुरे की संगत की, निगुरे के घर का खाना खाया, पानी पिया। अमर तू बहत्तर साल का हो गया है और तुझे अभी भी पता नहीं कि गुरु जरुरी होता है।''

अमरदेव जी आलापात्र थे, आपने रोते–रोते सारी रात बिता दी। सारी रात गंगा मैया को प्रार्थना की, ''हे गंगा मैया! मुझे गुरु से मिला दे।'' सुबह आपके भाई की बहू ने दही बिलोने के लिए चाटी में मधानी चलाई और वह बानी पढ़ने लगी। अमरदेव जी छिपकर बानी सुनते रहे। उस समय हिन्दुस्तान में यह रिवाज था कि ससुर बहू से बात नहीं कर सकता था। आखिर प्यार–प्यार ही होता है। अमरदेव जी ने उससे कहा, ''बेटी! ये सिफतें किसके अंदर हैं, तू किसकी बानी पढ़ रही है? क्या

इस वक्त ऐसा कोई महात्मा है?'' उसने कहा, ''हाँ जी! मेरे पिता जो आपके समधी हैं उनमें ये सब सिफतें हैं।''

अमरदेव जी ने कहा, ''बेटी! तू मुझे उनके पास लेकर चल।'' उसने कहा मेरा यह कायदा है कि जब तक मेरे पिता हुक्म न दे मैं मायके नहीं जा सकती। अमरदेव जी ने कहा कि तुझे जो सजा मिलेगी उसे मैं सह लूँगा। आखिर वह अमरदेव जी को अपने मायके ले आई और उसने अमरदेव जी को दरवाजे के बाहर खड़ा कर दिया कि मैं अंदर से इजाजत ले लूं। दिल को दिल से राह होता है।

गुरु अंगददेव जी ने कहा, ''बेटी! तू जिसे अपने साथ लेकर आई है उसे घर से बाहर क्यों खड़ा कर रखा है, उसे अंदर लेकर आ जा।'' अमरदेव जी आला पात्र थे। जब उन्हें गुरु मिला नाम मिला उन्होंने इस किस्म की सेवा की कि वापिस अपने गाँव जाने का नाम ही नहीं लिया बल्कि गुरु से मिलकर गुरु का रुप ही हो गए।

महाराज सावन सिंह जी सेवादारों और खाना तैयार करने वाली बीबीयों से कहा करते थे, ''गुरु सेवा का नकद ईनाम देता है लेकिन सेवा करनी बहुत मुश्किल है। सेवा का फल बहुत मीठा और प्यारा होता है।'' अमरदेव जी ने नाम प्राप्त करके फैसला कर लिया कि बाकी का जीवन गुरु के चरणों में बिताना है सेवा करनी है। हिन्दुस्तान में समधी के घर रहना बहुत लोकलाज है। लोगों ने ताना मारने में कोई कसर नहीं छोड़ी। ताना मारने वाले कहते कि इसके बेटो ने इसे घर से निकाल दिया है।

एक दिन आप रात को अपने गुरु अंगददेव जी के लिए पानी की गागर ला रहे थे। रास्ते में जुलाहे का घर पड़ता था, खड्डी में पैर अड़ गया आप गिर गए। घर के अंदर से जुलाहे ने पूछा, ''कौन है?'' जुलाही ने जोर से ताना मारा कि इस समय और कौन है अमरु निथावां होगा। उसे बेटों ने तो घर से निकाल दिया है। अमरदेव जी ने ये सब कुछ सुना

लेकिन कोई शिकायत नहीं की। उस समय कोई प्रेमी यह सब सुन रहा था उसने गुरु अंगददेव जी को यह सब बताया।

गुरु अंगददेव जी ने भरी संगत में कहा, ''देखो! लोग इसे निमाणां कहते हैं यह निमाणों का मान होगा। लोग इसे निथावां कहते हैं यह निथावों का थां होगा।'' गुरु अंगददेव जी ने नजर मिलाकर अमरदेव जी को भरपूर कर दिया। गुरु अंगददेव जी ने यह सब इसलिए किया क्योंकि अमरदेव जी के दिल में किसी के लिए घृणा नहीं थी।

हमें यह सोचना चाहिए कि सेवा करते हुए अगर कोई हमारे ऊपर मामूली सी भी अंगुली उठा दे तो हम हंगामा खड़ा कर देते हैं हाँलाकि वह हमारे भले और बेहतरी के लिए ही नुक्ता-चीनी करता है। जिससे वह अपना भजन खराब करके हमारा फायदा करता है। जितनी देर लोग हमारी वाह! वाह! करते हैं कि यह बहुत अच्छी सेवा करता है, यह बहुत अच्छा प्रेमी है यह बहुत भजन करता है तो हम फूले नहीं समाते।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सतगुरु जब जीव पर बख्शिश करते हैं तो उस बख्शिश को ब्रह्म और पारब्रह्म के मालिक भी नहीं रोक सकते क्योंकि सन्त अपनी दया-बख्शिश सच्चखंड से लाते हैं।''

दर्श पाय सतलोक सिधारी। सत्तनाम पद कीन सही।।
सही नाम पाया सतगुरु से। बिन सतगुरु सब जीव बही।।

जिन पर सतगुरु दया-मेहर करता है उन्हें ही परमात्मा अपना दर्शन देता है। दर्शन का यह फायदा है कि आत्मा सतलोक अपने घर वापिस पहुँच जाती है। सही नाम जो सच्चखंड से उठकर हमारे माथे के पीछे धुनकारे दे रहा है सतगुरु हमें उस नाम के साथ जोड़ते हैं।

जीव पड़े चौरासी भरमें। खान पान मद मान लाई।।
मान मनी का रोग पसरिया। बड़े बने जिन मार सही।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''जिन्हें नाम नहीं मिला गुरु नहीं मिला वे चौरासी से आते हैं और चौरासी में ही चले जाते हैं। जीव को अच्छा खाना खाने का चस्का लगा हुआ है, मान–बड़ाई का भयानक रोग लगा हुआ है। जहाँ मान मिलता हो वहाँ हम चार पैसे भी खर्च कर देते हैं। निरादर वाली जगह पर हम जाने के बारे में सोच ही नहीं सकते।''

सन्तमत में हमें हमेशा ही छोटा बनने के लिए प्रेरित किया जाता है। छोटे का मतलब यह नहीं कि हम हर किसी के आगे हाथ जोड़ते रहें। परमात्मा का रास्ता बाल से भी ज्यादा बारीक है, मन हाथी है अहंकार से भरा हुआ है। अगर परमात्मा ने हमें धन–दौलत बख्शी है, अच्छी जायदाद बख्शी है, अच्छी बुद्धि बख्शी है तो इसका मतलब यह नहीं कि हम अपने साथियों की इज्जत ही न करें, उन्हें अपने जैसा इंसान ही न समझें।

छोटा रहे चित्त से अंतर। शब्द माहिं तब सुरत गई।।
शब्द बिना सारा जग अंधा। बिन सतगुरु सब भर्म मई।।

परमात्मा ने हर प्रकार की मान–बड़ाई दी हो, धन–दौलत दिया हो तब अपने दिल में यह सोचें कि यह सब परमात्मा की मेहर से ही मिला है। हम जब तक शब्द–नाम को प्रकट नहीं कर लेते तब तक हमारी सुरत को पता नहीं कि अंदर किस रास्ते से जाना है। बिना सतगुरु के भ्रम नहीं जाता कि हमने कहाँ जाना है, कहाँ नहीं जाना?

शब्द भेद और शब्द कमाई। जिन जिन कीन्ही सार लई।।
शब्द रता सतगुरु पहिचानो। हम यह पूरा पता दई।।
खोलो आँख निकट ही देखो। अब क्या खोलूँ खोल कही।।
आगे भाग तुम्हारा प्यारी। नहिं परखो तो जून रही।।
कहना था सोई कह डाला। राधास्वामी खूब कही।।

● ● ●

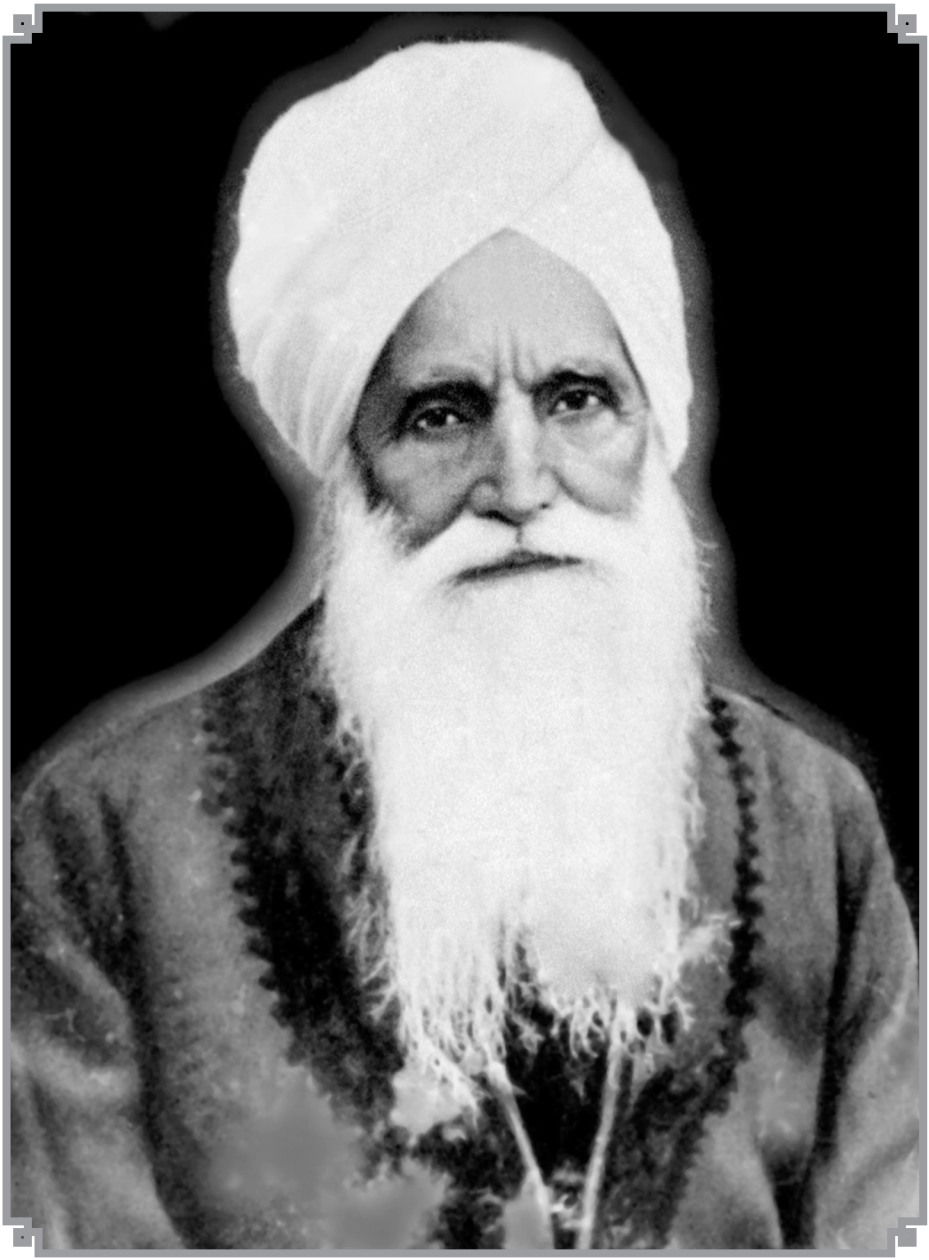

हुजूर सावन सिंह जी महाराज

महाराज सावन सिंह जी के मुखारविंद से

अनमोल वचन

सन्त चमत्कार नहीं करते अगर वे ऐसा करें तो सारी दुनिया ही उनके पीछे लग जाए। एक सन्त के लिए किसी को आँख दे देना, बच्चा दे देना, धन–दौलत दे देना या लाईलाज बीमारी को ठीक कर देना कोई मुश्किल नहीं। क्या ऐसे लोग परमात्मा को प्राप्त कर लेंगे?

दुनिया में काल का राज्य है। काल ने सतपुरुष से वर लिया हुआ है कि सन्त चमत्कार दिखाकर नहीं आत्माओं से भक्ति करवाकर लाएं। सन्त सदा ही परमात्मा की आज्ञा में रहते हैं। गुरु पर यह जिम्मेवारी आती है कि जिन आत्माओं को गुरु ने नामदान दिया होता है उन्हें गुरु शान्ति के देश सच्चखंड ले जाएं। गुरु इस दुनिया में ही नहीं बल्कि आगे की दुनिया में भी शिष्य की मदद करते हैं। गुरु का सबसे बड़ा चमत्कार मौत के समय शिष्य की संभाल करना होता है। गुरु अपने वायदे के अनुसार शिष्यों को लेने के लिए आते हैं और उन्हें काल के जाल से छुड़ाकर ऊपर के मंडलों में ले जाते हैं।

आप सारी जिंदगी दुनियावी कामों में मेहनत करके धन और शोहरत प्राप्त कर लेते हैं लेकिन अंदर की महान ताकत के लिए भी सावधान हो जाएं कि वह आपके लिए क्या कर रही है? आप एक कदम गुरु की तरफ चलकर देखें! गुरु आपकी तरफ हजार कदम चलकर आता है। गुरु से कुछ प्राप्त करने के लिए शिष्य को गुरु के दरबार में सच्चा भिखारी बनना पड़ता है। जो गुरु मौत के समय अपने शिष्य की संभाल नहीं करते ऐसे गुरु को दूर से ही सलाम कर देना अच्छा है।

गुरु दोनों जहान का मालिक होते हुए भी अपने आपको गरीब, दास कहकर बयान करता है। गुरु हमारी तरह इंसानी जामा धारण करके हमारे

बीच आकर रहता है, हमारी तरह खाता–पीता और सोता है। हम गरीब आत्माएं उस महान ताकत का अंदाजा नहीं लगा सकती। गुरु के ऊपर गरीबी–अमीरी का कोई असर नहीं होता; वह परमात्मा के भाणें में रहता है। सिर्फ गुरु ही हमें काल के जाल से छुड़ाकर सच्चे पिता के पास लेकर जा सकता है जिसके बाद हमारा इस दुनिया में आना–जाना खत्म हो जाता है। आप सच्चे दिल से अभ्यास करके अंदर गुरु के चरणों तक पहुँचे फिर देखें कि गुरु क्या है?

मौत के समय जायदाद, पत्नी, बच्चे आपके साथ नहीं जाएंगे उस समय आपका किया हुआ भजन–अभ्यास और गुरु ही आपके काम आएंगे। हम जीवन में पिछले कर्मों का भुगतान करते हुए शारीरिक और आर्थिक कष्ट भोगते हैं यह हमारे अपने ही कर्मों का फल है। आप गुरु को याद करें गुरु आपकी अंतरात्मा को मजबूत करेगा आपके कष्ट कम करेगा और मन को स्थिर करेगा। आपका गुरु के ऊपर जितना ज्यादा विश्वास बढ़ेगा उतनी ही आत्मा की गंदगी साफ होगी। जितनी जल्दी आपका लेन–देन खत्म होगा आपकी धार्मिक चढ़ाई के लिए उतना ही अच्छा है।

पूर्ण सन्त न कोई नया धर्म बनाते हैं और न पहले के बने धर्म को तोड़ते हैं। पूर्ण सन्त अपने शिष्यों से यही कहते हैं कि आप अपने–अपने धर्म और समाज में रहें। ईसाई को सच्चा ईसाई बनना चाहिए। मुसलमान को सच्चा मुसलमान और हिन्दु को सच्चा हिन्दु बनना चाहिए। हमारी आत्मा युगों–युगों से परमात्मा से बिछुड़ी हुई है। हमें परमात्मा के पास जाने के लिए अपना रास्ता ढूंढ़ना चाहिए।

परमात्मा हर इंसान के शरीर में है लेकिन इंसान उससे अंजान है। लकड़ी के अंदर आग है लेकिन वह उसे नहीं जलाती। हम पूर्ण गुरु की मदद से अंदर जाकर परमात्मा को शरीर में प्रकट कर सकते हैं। जब परमात्मा इस शरीर में प्रकट हो जाएगा तब परमात्मा उसकी पूरी देख–रेख करेगा।

काल निरंजन ने बहुत तपस्या और अभ्यास किया। उसके पिता सतपुरुष ने उसकी भक्ति से खुश होकर उसे दुनिया का कार्यभार सौंप दिया। काल कारण और प्रभाव के नियम अनुसार ही न्याय करता है।

गुरु ने आपको जो पाँच पवित्र नाम दिए हैं आप उन्हें दोहराकर आँखों के बीच केन्द्रित करें। ध्यान को नौं द्वारों से निकालकर आँखों के बीच तीसरे तिल पर लाना शिष्य की जिम्मेवारी है आगे आत्मा को ऊपर लेकर जाना गुरु की जिम्मेवारी है। आँखों का केन्द्र बिन्दु सीमा है इसके ऊपर गुरु माता के रुप में खड़ा है और नीचे आत्मा बच्चे की तरह खड़ी है।

माता लगातार अपने बच्चे से कह रही है कि बच्चा सीमा पार करके उसके पास आ जाए ताकि वह उसकी देख–रेख कर सके लेकिन बच्चा समझता है कि यह काम करना मुश्किल है। माता कहती है कि जब तक तुम मेरे पास नहीं आओगे मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकती इसी तरह गुरु आशा करता है कि आत्मा निडर होकर मन के साथ लड़े और आँखों के केन्द्र बिन्दु तीसरे तिल पर आ जाए ताकि वह उसे आगे लेकर जा सके।

मन काल का एजेंट है, यह हर एक के अंदर बैठा हुआ अपने मालिक का काम कर रहा है। अगर कोई आदमी सुबह जल्दी उठकर अभ्यास के लिए बैठता है तो काल अंदर से ही उसे सलाह देता है कि अभी सूर्य निकलने में बहुत देर है क्यों न कुछ देर शरीर को आराम दे दिया जाए। फिर भी अगर वह हिम्मत करके अभ्यास में बैठ जाए तो मन अपना दफ्तर खोल लेता है, वहाँ बैठे–बैठे उसे दुनियावी कामों में उलझा देता है।

आत्मा को उलझाने के लिए काल के अलग–अलग तरीके हैं। कोई विरला हिम्मतवाला ही इसके जाल से बचकर निकल सकता है। आपको निरंतर भजन पर बैठना चाहिए चाहे कुछ भी हो मन के आगे हार न मानें। जो इस लड़ाई में सफलता प्राप्त कर लेता है गुरु पावर उसे ईनाम के रुप में नाम का खजाना देता है, उसका सारे संसार में यश होता है।

जिस तरह मन अपने मालिक का काम पूरी लगन से करता है, उसी तरह शिष्य को भी अपने गुरु का काम पूरी लगन से करना चाहिए। शिष्य को अपना मुख गुरु की तरफ रखना चाहिए। हमेशा गुरु को याद करें, गुरु के बारे में सोचें, गुरु के आगे रोएं। हमने अपना सारा जीवन दुनियावी चीजों के लिए लगा दिया। आप पूर्ण विश्वास रखें कि गुरु हर समय आपके साथ है।

ऐसा अक्सर होता है कि जो लोग सन्तों के साथ रहते हैं वे अहंकारी हो जाते हैं और यह भूल जाते हैं कि अभ्यास करना उनके लिए भी जरुरी है, उन्हें भी गुरु के आदेश के अनुसार जीना चाहिए। इसका परिणाम यह होता है कि उनके अंदर गुरु को देखने की उत्सुकता कम हो जाती है।

सन्तों के साथ रहना तलवार की नोंक पर रहने के बराबर है। आप सन्तों से तभी फायदा उठा सकते हैं अगर लगातार अभ्यास करते रहें। जो प्रेमी दूर से सन्तों के पास आते हैं वे बहुत विनम्र होते हैं उनके अंदर सन्तों से मिलने की तड़प होती है और वे अपनी कमाई लंगर में डालते हैं। गुरु के पास रहने वाले गुरु को अनदेखा करना शुरु कर देते हैं और अपने आपको विशेष अधिकारी समझकर लंगर का खाना और आश्रम की दूसरी सुविधाएं बिना कोई पैसा दिए हुए ग्रहण करते हैं। जिसका परिणाम यह होता है कि उन्होंने जो अभ्यास कमाया होता है वे उसे भी गँवा देते हैं।

भक्ति का मार्ग उनके लिए है जो अपने परिवार, नाम, शोहरत, अच्छी सेहत, सुंदरता, धर्म और अपने देश का अहंकार छोड़कर अपने अंदर नम्रता धारण कर लेते हैं। बल्ख बुखारा एक बादशाह था, उसने अपना राज्य छोड़कर बारह साल तक कबीर साहब की सेवा की। उसे जो भी रुखा–सूखा मिलता वह उसे खुशी से स्वीकार कर लेता।

अहंकार को खत्म करना पहाड़ पर चढ़ने के बराबर है। हम अपने आपको गुरु के चरणों की धूल समझकर गुरु के आगे समर्पित होकर ही

गुरु की दया के पात्र बन सकते हैं। जब शिष्य अभ्यास में बैठता है तो गुरु इस बात से अंजान नहीं होता। गुरु के पास जो कुछ होता है वह शिष्य को दे देता है और उसके अंदर परमात्मा के प्रति विश्वास पैदा कर देता है।

जिस तरह कोई भिखारी किसी अमीर आदमी के दरवाजे पर माँगने के लिए बैठ जाता है तो अमीर आदमी को पता होता है कि भिखारी मेरे दरवाजे पर बैठा है। उसी तरह परमात्मा हमारा रोना सुनता है, हमारी परवाह करता है लेकिन हम उसके प्यार को अनसुना कर देते हैं। हम अंजान हैं। हम अंदर जाकर ही देख सकते हैं कि सारा संसार उसके आदेश और उसकी देख–रेख में चल रहा है।

यह दुनिया बहुत बड़ा मायाजाल है। यह दुनिया बुरी नहीं लेकिन आप इसे अपना न समझें। यह दुनिया आपको धोखा देगी, मौत के समय आपका साथ नहीं देगी फिर भी हम इसके साथ जुड़े रहते हैं। जब हम सन्त की शरण में जाते हैं तो हमें मालूम हो जाता है कि यह शरीर तत्त्वों से बना है, हम इस शरीर को भी यहीं छोड़ जाएंगे। हमारी आत्मा पवित्र थी लेकिन शरीर का साथ लेकर नीचे आ गई फिर मन और इन्द्रियों का साथ लेकर दुनिया में उलझ गई और अपनी पहचान भूल गई।

आप अपने फैले हुए ख्याल को इकट्ठा करके तीसरे तिल पर लाएं। सिमरन हमारे आगे के सफर का जरूरी कदम है। आमतौर पर सारी दुनिया अपने–अपने सिमरन में लगी हुई है। जैसे किसान अपने खेत व फसलों के बारे में सोचता है। दुकानदार अपने सामान और ग्राहकों के बारे में सोचता है। गृहिणी अपने घर की जरूरतों के बारे में सोचती है।

ऐसा कोई नहीं है जो सिमरन में न लगा हो। जब हम पूर्ण गुरु की शरण में जाते हैं तो गुरु हमें समझाते हैं कि आप लगातार नाम का सिमरन करें, अंदर गुरु के पास पहुँचें। सिमरन में बहुत शक्ति है। नामलेवा साहसी और हिम्मती होता है।

हमें हमेशा अपना मन गुरु की याद में लगाए रखना चाहिए। गुरु की याद हमें सुख–दुःख से बचाएगी और परमात्मा की राह पर चलाएगी।

हर समय गुरु को याद रखें फिर देखें कि अंदरूनी शक्ति किस तरह आपकी मदद करती है। जिस तरह कोई जंगल में गुम हो जाए वह गुरु को याद करे तो अंदरूनी शक्ति उसे रास्ता दिखाती है। यह सिमरन की महानता है। आप लगातार दिन–रात, साँस–साँस के साथ सिमरन करके अपने जीवन के धार्मिक रास्ते को आसान बनाएं।

जिस तरह शीशे के मर्तबान में रखी हुई इलायची या अचार साफ नजर आता है उसी तरह जब शिष्य पूर्ण गुरु के पास जाता है तो गुरु को सब कुछ साफ दिखाई देता है लेकिन गुरु उसे जग जाहिर नहीं करता। गुरु, शिष्य को कमजोरियों से ऊपर उठने के लिए प्रेरित करते हैं, उसके पापों को जानते हुए भी उसके साथ प्यार से पेश आते हैं।

जीवन में गुरु ही सब कुछ देने वाला है, खासतौर पर नाम की दौलत। हम नहीं जानते कि हमारी भलाई किसमें है। गुरु के पास कभी न खत्म होने वाली पूँजी है। हम हीरे–मोतियों की जगह पत्थर माँगते हैं, गुरु की दया को नहीं समझते अगर किसी की बीमारी ठीक नहीं होती या कोई कचहरी में केस हार जाता है तो हम गुरु को जिम्मेवार ठहराते हैं कि गुरु ने हमारी मदद नहीं की। जो लोग ऐसी दुनियावी चीजों की चाह में सतसंग में आते हैं उनके लिए बेहतर होगा कि वे अपने घर में ही तशरीफ रखें।

सुख–दुःख, गरीबी–अमीरी और जन्म–मृत्यु पहले से ही तय है, जैसा बोया है वैसा ही काटना पड़ेगा। अच्छा यही है कि हम अपना लेन–देन अपनी इच्छा से खत्म कर दें। गुरु से गुरु को ही माँगें जिसे गुरु मिल गया उसे सब कुछ मिल गया। गुरु अपने शिष्यों से कुछ नहीं लेता लेकिन छोड़ता भी कुछ नहीं। सच्चा शिष्य दुनियावी कामों में रूचि नहीं रखता और अपनी जमीन–जायदाद को गुरु का ही समझता है। ● ● ●

कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

हुजूर सावन सिंह जी महाराज की याद में

सच्चे गुरु की संगत आत्मा को उभार देने वाली होती है। जब आप किसी पहलवान को उसकी ताकत का आनन्द उठाते हुए देखते हैं तो कुदरती तौर पर आप भी ताकतवर बनने की कोशिश करते हैं। इसी तरह जब आपको गुरु के पास बैठने का सौभाग्य प्राप्त होता है तब आप उसके आस–पास ताकत से भरपूर निकलती हुई किरणों को पाएंगे।

मौलाना रूम कहते हैं, ''अगर ऊँचे भाग्य से आपको एक दिन का चौथा हिस्सा भी किसी प्रभु प्राप्त इंसान के चरणों में बैठने को मिले तो आपको उतना समय वह प्रेरणा मिलेगी जो सौ साल भक्ति करने से भी नहीं मिलती।'' अगर कहीं आग जल रही है तो वहाँ से गर्माइश का फायदा उठाएं। आप वहाँ से जो चार्जिंग लेते हैं वह किताबे पढ़ने से नहीं मिलती फिर उस चार्जिंग को रोजाना बढ़ाएं।

जो लोग हुजूर के चरणों में बैठे थे, वे बहुत भाग्यशाली थे। उनकी मौजूदगी में और जीवन तत्व को देखकर उन्होंने जिस परम आनन्द का अनुभव किया, वे उस आनन्द को कैसे भूल सकते हैं। हम कह सकते हैं कि यह इस तरह है जैसे चकोर चाँद को देखती रहती है आँखें नहीं झपकती। चकोर प्यार में पीछे की तरफ इतना मुड़ती चली जाती है कि उसकी गर्दन जमीन से लगकर टूट जाती है अगर चाँद गायब हो जाए तो उसकी क्या हालत होगी?

उन लोगों को याद दिलाने के लिए यह एक उदाहरण है जिन्होंने पतंगो की तरह गुरु की मधुर संगत का आनन्द उठाया है, ऐसे आर्शीवाद का लुत्फ लिया है। जिन लोगों ने हुजूर के दर्शन किए हैं आज भी उनकी दया से लोगों को मदद मिल रही है।

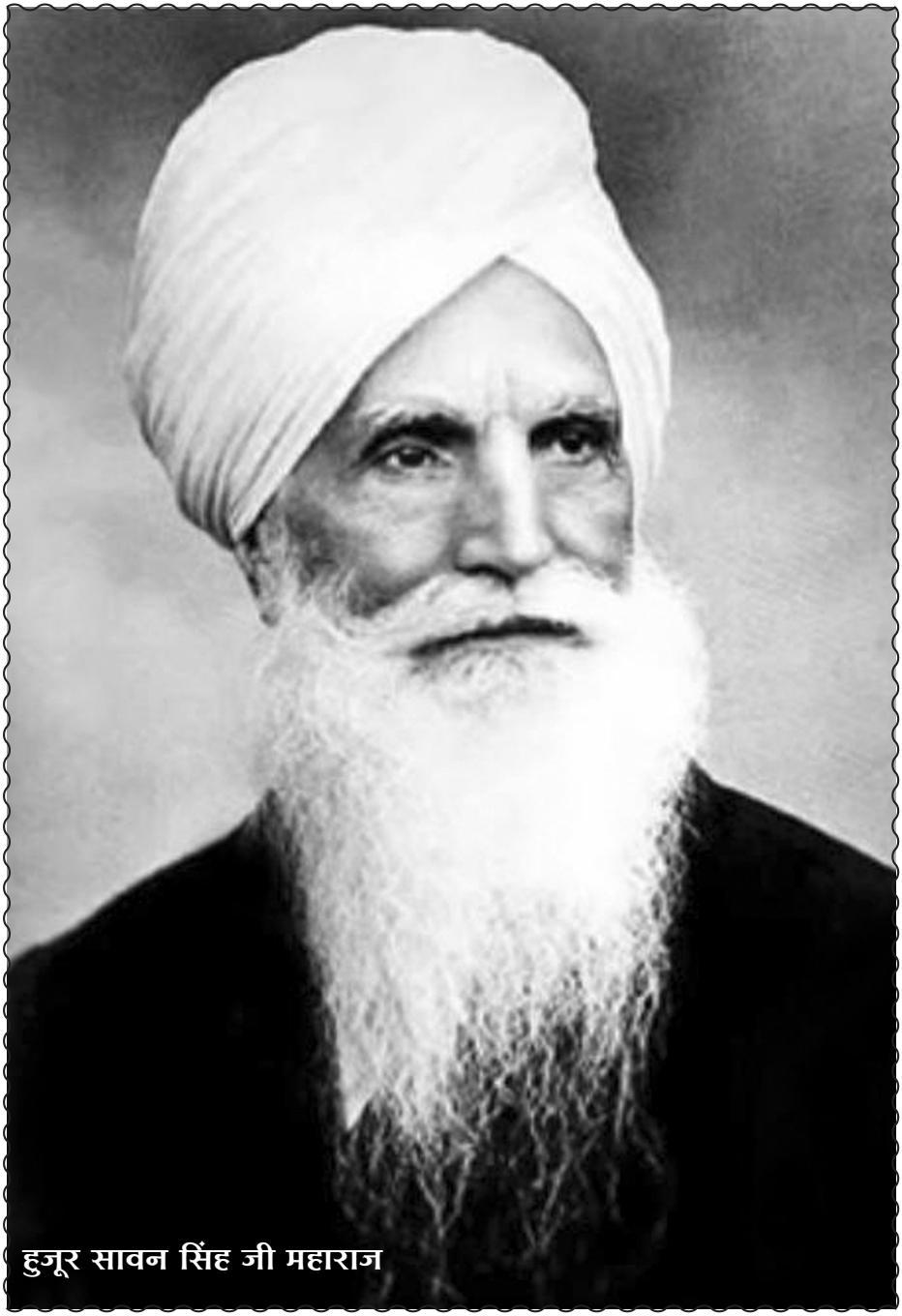

हुजूर सावन सिंह जी महाराज

हुजूर की शिक्षा क्या थी? आपकी शिक्षा बीते हुए युगों से चली आ रही शिक्षाओं के समान ही है। जब भी लोग उस शिक्षा को भूल जाते हैं तब सन्त दोबारा उस शिक्षा को ताजा करने के लिए संसार में आते हैं। आज फिर दुनिया दुखी दिलों से भरी हुई है लेकिन जहाँ जरूरत होती है वहाँ आपूर्ति आएगी। कुदरत का कानून है कि भूखे के लिए भोजन और प्यासे के लिए पानी है।

पढ़े–लिखे और अनपढ़ दोनों के लिए रूहानियत का विषय समान है। हमने इन्द्रियों, मन और बुद्धि को स्थिर करके सच्चाई को जानना है। जिसके पास जितने शब्दों का भंडार है, वह उतने शब्दों में बताएगा और विभिन्न उदाहरण देगा कि परमात्मा क्या है? कोई कैसे जान सकता है कि यह संसार कब बना, इसे किसने बनाया?

जवाब यह है कि इस संसार को परमात्मा ने बनाया है। कब और कैसे यह हम परमात्मा के पास जाकर उससे पूछ सकते हैं क्योंकि वह कर्ता है। जब हम परमात्मा के पास पहुँचेंगे तब हमारी इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि और शरीर हमारे साथ नहीं होगा। महाज्ञान हमारे लिए खुल जाएगा और हमें किसी भी प्रश्न की जरूरत नहीं रहेगी।

हुजूर हमेशा यह जवाब दिया करते थे, ''आओ भाईयो! जिसने यह दुनिया बनाई है हम उससे यह सवाल क्यों नहीं पूछते?'' सभी सन्तों ने एक समान जवाब दिया है। कबीर साहब कहते हैं, ''जब जादूगर अपनी कला दिखाता है तो हर कोई उस खेल को देखने के लिए आता है।'' परमात्मा हर समय हर जगह का कंट्रोलर है अगर हमने यह सब देखना है तो हमें उतना ऊँचा उठना पड़ेगा जितना ऊँचा परमात्मा है।

एक बार कुछ पढ़े–लिखे लोग कबीर साहब के पास इसी विषय पर चर्चा करने के लिए आए। तब कबीर साहब ने कहा, ''तुम्हारा और मेरा मन एक नहीं हो सकता। मैं वह कहता हूँ जो मैंने देखा है और तुम वह

कहते हो जो कागज पर लिखा है।'' जो इंसान सच्चाई जानना चाहता है उसे गुरु की संगत करनी चाहिए, गुरु पहले से ही सच्चाई के संपर्क में है।

गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है, ''अगर आप ज्ञान की तलाश में हैं तो किसी ऐसे महात्मा के पास जाएं जो अंदर से परमात्मा के साथ एक है। जब आप परमात्मा से जुड़े हुए महात्मा के पास जाएंगे और उससे नम्रता से सवाल पूछेंगे तो आपको तसल्ली हो जाएगी। सच्चा गुरु अपनी मर्जी आप पर नहीं थोपेगा बल्कि वह हमारी समझ को तब तक विकसित करेगा जब तक वह विषय हमारी समझ में न आ जाए।''

इस मार्ग के लिए ब्रह्मचार्य जीवन बहुत जरूरी है। अगर मकान की नींव मजबूत नहीं तो वह मकान कितनी देर खड़ा रहेगा? रूहानियत के लिए इसकी पहरेदारी करनी बहुत जरूरी है। वेद-शास्त्र कहते हैं कि घी की चालीस बूँदों से खून की एक बूँद बनती है और खून की चालीस बूँदो से अस्थि मज्जा की एक बूँद बनती है और अस्थि मज्जा की चालीस बूँदो से वीर्य की एक बूँद बनती है। यह कितनी कीमती वस्तु है। इसे जितना ज्यादा संभाला जाएगा उतना ज्यादा हमारा जीवन होगा।

हम जितने ज्यादा भोग करेंगे, मौत के उतने ही नजदीक बढ़ते चले जाएंगे क्योंकि एक भोग में लिप्त रहने का परिणाम कई दिनों तक हानिकारक प्रभाव देता है। ऐसे लोगों का क्या हाल होता है जो दिन-रात भोगों में व्यतीत करते हैं? उनका दिल, मन व शरीर बीमार रहते हैं अगर संसार में बीमारियाँ बढ़ रही हैं तो इसकी यही वजह है।

मेरी उम्र के लोग यह गवाही देंगे कि जब हम छोटे थे उस समय परिवार में कोई बच्चा पैदा होता और कोई छोटा बच्चा पूछता, ''यह कहाँ से आया है?'' माता-पिता कहते थे कि इसे कोई लाया है। आज आप एक छोटे से बच्चे से इस विषय के बारे में पूछेंगे तो वह सब कुछ बता देगा, इसके लिए हम जिम्मेवार हैं क्योंकि हमारा पूरा जीवन गंदा है।

मैं हमेशा कहा करता हूँ कि हमारा जीवन मन, वचन और कर्म से पवित्र होना चाहिए। आप शायद ऐतराज करेंगे और कहेंगे, ''पारिवारिक जीवन क्या है?'' मुझे कल अमेरिका से एक पत्र मिला है, जिसमें लिखा है, ''अब हम आत्मा रूप में एक पति–पत्नी हैं।'' शादी का मतलब जीवन में एक साथी का साथ लेना जो हमारे सुख–दुःख में साथ हो। शादी–शुदा जीवन को अगर धर्मग्रंथों के अनुसार जिआ जाए तो रूहानियत के लिए कोई रूकावट नहीं। बच्चों का होना एक कर्तव्य है लेकिन आपका संपर्क तभी होना चाहिए जब आपको बच्चा चाहिए। आज तक तकरीबन जो भी सन्त आए हैं उन्होंने पारिवारिक जीवन जिआ है लेकिन उनका जीवन संतुलित और उनके काबू में था।

मैं जब लाहौर में था उस समय हुजूर को एक व्यक्ति का पत्र आया कि वह उनसे मिलना चाहता है। तब हुजूर सावन सिंह जी ने मुझे बुलाया और कहा, ''कृपाल सिंह! तुम जाकर उस व्यक्ति से मिलो।'' वह व्यक्ति शहर के दूसरे छोर पर रहता था। मैं जब उसके पास पहुँचा तो उसने कहा, ''क्या तुम्हें हुजूर ने भेजा है?'' मैंने जवाब दिया, ''हाँ!'' फिर उसने कहा ''मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि मैं पहले गुरु रामदास जी के साथ था फिर मैं दसवें गुरु गोबिंद सिंह जी के समय में आया लेकिन मैं अभी तक घर वापिस नहीं पहुँचा हूँ। मैं हुजूर से विनती करता हूँ कि वे जिसे भी नामदान दें ज्योति और नाद सिद्धान्त का पूरा नामदान दें केवल सिमरन नहीं ताकि नामलेवा मेहनत करके मुक्त हो जाए।''

मनुष्य जामा बड़े भाग्य से मिलता है, उससे भी ज्यादा ऊँचे भाग्य हों तो गुरु मिलता है। गुरु पूरा नामदान देता है इसका पूरा फायदा उठाएं।

आज हम बाबा सावन सिंह जी की याद में बैठे हैं। एक वर्ष पहले भी हम एक साथ बैठे थे। आप उस वर्ष के बारे में सोचें कि तब आप कहाँ थे और आज आप कहाँ हैं, क्या आपने कुछ तरक्की की? अगर आपने

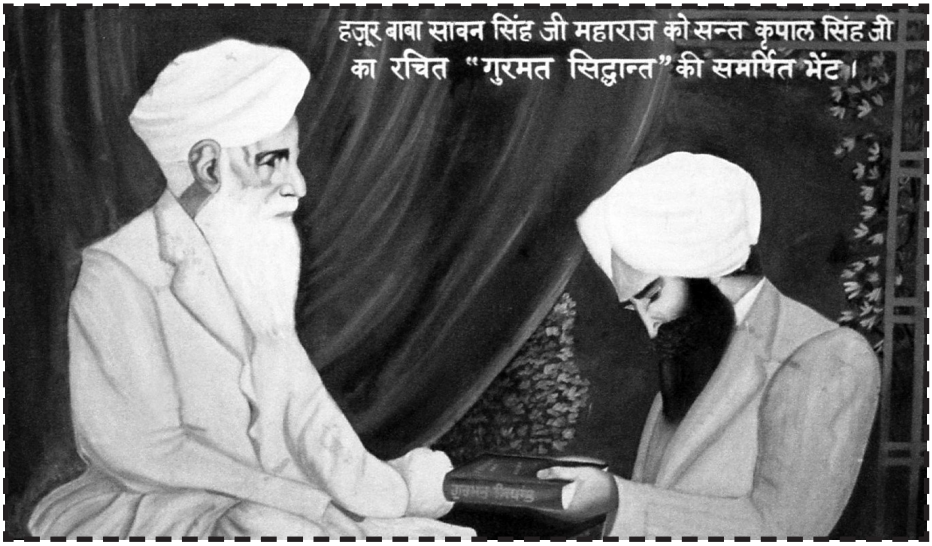

कोई तरक्की नहीं की तो अपने सबक को फिर से पढ़ें। आप गुरु के वचनों पर जितना ज्यादा अमल करेंगे उतना ही उनके नजदीक आएंगे। हुजूर सावन अक्सर कहा करते थे, ''अगर दवाई लाकर अलमारी में रख दें तो ईलाज कैसे होगा?''

नाम की ज्योति और नाद सिद्धान्त के साथ जुड़ना जीवन की रोटी और पानी है। आप जब तक अपनी आत्मा को रोटी नहीं दे देते तब तक अपने शरीर को रोटी न दें।

4 अक्टूबर 1947 को हुजूर शारीरिक रूप से बीमार हुए। आपने 12 अक्टूबर को मुझे बुलाया और मुझसे कहा ''बाकी सारी ड्यूटियाँ विभिन्न लोगों को दे दी गई हैं लेकिन अभी मैंने नामदान की ड्यूटी किसी को नहीं दी। यह ड्यूटी मैं तुम्हें देता हूँ ताकि रूहानियत का काम बढ़ता रहे।''

ये आपके शब्द हैं। नामदान का कार्य बढ़ रहा है। किसी को कहीं से भी मदद मिले तो उसे ले लेनी चाहिए। मैं सबसे प्यार करता हूँ और चाहता हूँ कि मेरे गुरु का नाम ज्यादा से ज्यादा जाना जाए और उनका काम जारी रहे। ● ● ●

गुरु नानक देव जी
महाराज की बानी

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सच और झूठ

16 पी. एस. आश्रम, रायसिंह नगर (राजस्थान)

सन्त–महात्मा परमात्मा के भेजे हुए इस संसार में आते हैं। वे परमात्मा के नियमों के मुताबिक ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं। जिन आत्माओं के दिल में तड़प होती है वे इनसे फायदा उठा लेते हैं, बाकी लोग सोचते ही रह जाते हैं। यह जरूरी नहीं कि परिवार के लोग ही इनसे फायदा उठाएं। ऐसा नहीं कि सन्तों से अमीर लोग ही फायदा उठा सकते हैं, गरीब नहीं। सन्त सभी के साथ प्यार करते हैं।

गुरु नानकदेव जी का जन्म ननकाना साहब में हुआ जो अब पाकिस्तान में है। पहले इस जगह को राय भौंए की तलवंडी कहा जाता था। राय इस इलाके का मालिक और बड़ी हस्ती वाला था। राय ने गुरु नानकदेव जी को बचपन से ही पहचान लिया था कि यह खुदा की तरफ से आया हुआ खुदा का बंदा है।

गुरु नानकदेव जी के माता–पिता उदास रहते थे कि हमारा बेटा दुनियावी कारोबार नहीं करता। वे राय भौंए से गुरु नानकदेव जी की शिकायतें करते। राय यही कहता, ''आप परेशान न हों आपका बेटा जो भी नुकसान करेगा मैं उसे पूरा कर दूँगा। परमात्मा ने जो कारोबार इनके जिम्मे लगाया है ये अपने आप ही उस कारोबार में लग जाएंगे।''

एक दिन राय भौंए ने गुरु नानकदेव जी से कहा, ''मेरे पास परमात्मा का दिया हुआ बहुत अन्न–धन है। आप मुझे वह उपदेश दें जिससे मेरे मन को शान्ति आ जाए और मुझे सच का ज्ञान हो जाए।'' राय भौंए की विनती स्वीकार करते हुए गुरु नानकदेव जी ने यह शब्द उचारा:

कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु।।

आप प्यार से राय भौंए को समझाते हैं , ''देख प्यारेया! राजा भी कूड़ है और प्रजा भी कूड़ है। यह संसार और संसार की सभी वस्तुएं कूड़ हैं, असत्य हैं।'' कूड़ उस चीज को कहते हैं जिसका अपना कोई स्वरूप न हो। जिस तरह मृग को प्यास लगती है वह दौड़ता है कि वहाँ पानी है लेकिन सच्चाई यह है कि वहाँ पानी नहीं होता। उसे फिर उसी तरह नजर आता है और वह फिर दौड़ता है। सन्तमत में इसे मृगतृष्णा कहते हैं। इसी तरह इंसान असत्य चीजों को सत्य माने बैठा है।

कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु।।

रामायण में लिखा है कि राजा रावण ने बहुत लम्बी आयु भोगी, ज्यादा से ज्यादा विद्या प्राप्त की और बहुत सोना–चाँदी इकट्ठा किया। उसने बहुत ऊँची मंजिलों वाले मकान बनवाए। यह सब कुछ असत्य है ये माड़ियाँ और इनमें रहने वाले जीव असत्य हैं। नामदेव जी कहते हैं:

लंका गढ़ सोने का भया, मूर्ख रावण क्या ले गया।

कबीर साहब अपनी बानी में लिखते हैं:

इक लख पूत सवा लख नाती, ते रावण घर दिया न बाती।

कुड़ु सुइना कूड़ु रूपा कूड़ु पैन्हणहारु।।

आप कहते हैं, ''सोना भी कूड़ है चाँदी भी कूड़ है। जो जीव इनका श्रृंगार करते हैं वे भी असत्य हैं, यहाँ का सब कुछ चलणहार है।''

कुड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपु अपारु।।

आप कहते हैं, ''यह काया भी असत्य है, कूड़ है सदा नहीं रहेगी। यह पराया मकान है इसे भी यहीं छोड़ जाना है। इस शरीर पर जो सुंदर कपड़े पहनते हैं ये भी साथ नहीं जाएंगे, ये भी असत्य हैं। इन कपड़ो को

पहनने वाले जीव भी सदा नहीं रहेंगे। हम इस रूप का मान करते हैं कि हमारे जैसा कौन है? हड्डियों के ऊपर माँस है और माँस के ऊपर रूप का पोचा फिरा हुआ है। हम बुढ़ापे में इस बदलते हुए रूप को देखते हैं, मौत इसका रूप बिगाड़ देती है। मिट्टी, मिट्टी में जाकर मिल जाती है।''

कूड़ मीआ कूड़ु बीबी खपि होए खारू।।

आप कहते हैं, ''मियाँ भी असत्य है और बीबी भी असत्य है, ये आपस में लड़ते-झगड़ते हैं। जो आपस में प्यार करने में लगे हुए हैं वे भी असत्य हैं, सदा नहीं रहेंगे। हम नहीं जानते कि पिछले जन्मों में हमने कितनी पत्नियाँ और कितने पति बनाकर छोड़ दिए। हम जो कुछ भी इन आँखों से देख रहे हैं ये सब असत्य है।''

कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारू।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''प्यारेयो! यह बहुत अचरज बात है कि कूड़ का कूड़ के साथ प्यार लगा हुआ है। हम परमात्मा को भूल गए हैं।''

दात प्यारी विसरया दातारा।

किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारू।।

अब गुरु नानकदेव जी राय भौंए को बहुत प्यार से समझाते है, ''मैं तुझे किसका पता दूं कि तू किसके साथ दोस्ती कर? जो पैदा हुआ है उसने एक दिन यह संसार छोड़कर चले जाना है। सारी दुनिया ही चलती सराय है, कोई भी पदार्थ स्थिर नहीं। परमात्मा के अलावा किसके साथ दोस्ती करें, किसके साथ प्यार करें?''

कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरू।।

कूड़ बुरा है। कूड़ शहद के समान मीठा लगता है फिर भी जीव इसके साथ चिपटे हुए हैं। दुनिया कूड़ का साथ लेकर भवसागर में डूबी हुई है।

एक पंडित राजदरबार में कथा किया करता था। एक दिन कथा करने के बाद उस पंडित की निगाह राजकन्या पर चली गई। उसके दिल में ख्याल आया कि मैं इस कन्या को कैसे हासिल करूं। हम जानते हैं कि वाचक ज्ञानियों का क्या हाल होता है? जब काम का वेग आता है तो यह सारी अक्लें गुम कर देता है। वह सोचता हुआ अपने घर चला गया।

अगले दिन जब वह कथा करने आया तो उदास और परेशान था। राजा ने उससे पूछा, ''पंडित जी! आप उदास क्यों हैं?'' पहले तो वह चुप रहा। राजा के प्यार से पूछने पर बोला, ''मैं आपको क्या बताऊँ? मुँह छोटा और बात बड़ी है। मैंने ज्योतिष लगाकर देखा है कि आपके ऊपर बहुत कठिन साढ़े-सत्ती आने वाली है जिससे आपको बहुत कष्ट होगा। मैंने आपका नमक खाया है मैं आपको दु:खी कैसे देख सकता हूँ?''

राजा ने पूछा, ''इसका कोई उपाय बताएं?'' पंडित ने कहा, ''इसका उपाय है लेकिन आपके लिए करना बहुत मुश्किल है।'' राजा ने कहा, ''पंडित जी! आप बताएं।'' पंडित ने कहा, ''आप एक अच्छे संदूक जिसमें हवा भी न जाए उसमें अपनी राजकन्या को और उसे जो दान-दहेज देना चाहते हैं साथ में कुछ दिनों का खाना रखकर उस संदूक को दरिया में बहा देने से आपकी साढ़े-सत्ती टल जाएगी।''

राजा ने उसी तरह रात को संदूक दरिया में बहा दिया, जिसके बारे में किसी को भी पता नहीं था। पंडित ने अपने साथियों को बताया कि दरिया में जो संदूक बहा जा रहा है इसमें बहुत धन-पदार्थ है, हम इसे बाहर निकाल लेते हैं। जब उन्होंने संदूक बाहर निकाल लिया तो पंडित ने अपने साथियों से कहा अगर हम इस संदूक को अभी खोलेंगे तो कोई देख लेगा। हम इसे छिपाकर रख देते हैं, एक-दो दिन बाद खोलेंगे।

वहाँ एक राजा शिकार खेलता हुआ आया, उसने देखा कि जंगल में संदूक छिपाकर क्यों रखा गया है? जब राजा ने संदूक खोला तो देखा

कि उसमें एक सुंदर राजकन्या बैठी थी। राजकन्या ने राजा को पंडित की सारी करतूत बताई। राजा ने संदूक में से राजकन्या और उसमें रखा हुआ दान–दहेज का सोना–चाँदी व धन–पदार्थ निकाल लिया। राजा के पास एक भालू था, राजा ने उस भालू को संदूक में कैद कर दिया।

पंडित जी रात को अकेले ही अपनी कामना पूरी करने के लिए जंगल में गए। संदूक में कैद भालू गुस्से में था। जैसे ही पंडित ने संदूक खोला भालू पंडित पर झपटा और उसे खा गया। परमात्मा ने राजकन्या की रक्षा की, उसे राजा के घर भेज दिया। बेशक पंडित जानता था कि झूठ बोलना अच्छा नहीं फिर भी वह लालचवश झूठ बोलने से नहीं हटा।

गुरु साहब परमात्मा के आगे फरियाद करते हुए कहते हैं, ''तेरे नाम के अलावा संसार में जो कुछ भी दिखाई दे रहा है वह कूड़ है झूठ है।''

नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु।।
सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ।।

राय भौंए ने गुरु नानकदेव जी से कहा, ''आपने जो कुछ बताया वह तो मेरी समझ में आ गया है कि यह संसार झूठ है लेकिन उस सच्चे परमात्मा को जिसका कभी नाश नहीं होता उसे कैसे पहचान सकते हैं?''

गुरु नानक देव जी कहते हैं, ''सबसे पहले हमारा हृदय सच्चा होना चाहिए। हमारे दिल में सच्चाई को प्रकट करने का शौंक होना चाहिए। हम अपने आपको और दुनिया को धोखा दे सकते हैं लेकिन परमात्मा हमारे अंदर बैठा सब कुछ देख रहा है।''

महात्मा, सतसंगी को एक नमूने का जीवन बनकर दिखाते हैं कि ईमानदारी से रोजी–रोटी कमाएं। हर प्रकार के नशों को छोड़ें, विषय–विकारों से ऊपर उठें। महात्मा शादी को बुरा नहीं कहते वे कहते हैं कि सयंम में रहें। औरत–मर्द दोनों को हुक्म है कि वे एक–दूसरे पर सब्र करें।

कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ।।

जब हम तन–मन से सच्चे होकर नाम की कमाई करते हैं तो हमारे अंदर नाम का प्रकाश हो जाता है। नाम हमारे ऊपर जन्म–जन्मांतरों से चढ़ी हुई कूड़ की मैल को धो देता है।

सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु।।
नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख दुआरु।।

आप कहते हैं, ''हम सच्चे परमात्मा को कैसे प्रकट कर सकते हैं? सबसे पहले हमने कण–कण में व्यापक उस शब्द की आवाज को सुनना है जो सच्चखंड से उठकर हमारे माथे के पीछे धुनकारे दे रही है। उस आवाज को अपने आपमें जज्ब कर लें, बोझ न समझें, प्यार से सुनें।''

हमारे ख्याल जितने पवित्र होंगे उतना ही हमारा मन पवित्र होगा। जब हम सिमरन के जरिए एकाग्र हो जाते हैं और धुन को ऊपर से पकड़ते हैं, तब वह शब्द हमारे अंदर प्रकट हो जाता है फिर हमारे दिल के अंदर ऐसा प्यार जाग जाता है जिसे हम छोड़ना चाहें तो भी नहीं छोड़ सकते।

सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ।।

अब आप कहते हैं, ''हम सच शब्द–नाम को तभी पहचान सकते हैं जब हमने अंदर जाने की युक्ति प्राप्त की हो कि किस रास्ते से अंदर जाना है। हमने सबसे पहले उस जानकार से मिलना है जो अंदर जाता है, वह हमें भी अंदर ले जा सकता है।''

धरती काइआ साधि कै विचि देइ करता बीउ।।

जब हम अपना तन और मन पवित्र करके विषय–विकारों से ऊपर उठ जाते हैं, दुनिया का सिमरन और विषय–विकारों के चितवन को छोड़कर नाम का सिमरन करते हैं तो मन पवित्र हो जाता है। जब सन्त–महात्मा हमारी ऐसी हालत देखते हैं तो वे इस अच्छी धरती के अंदर नाम

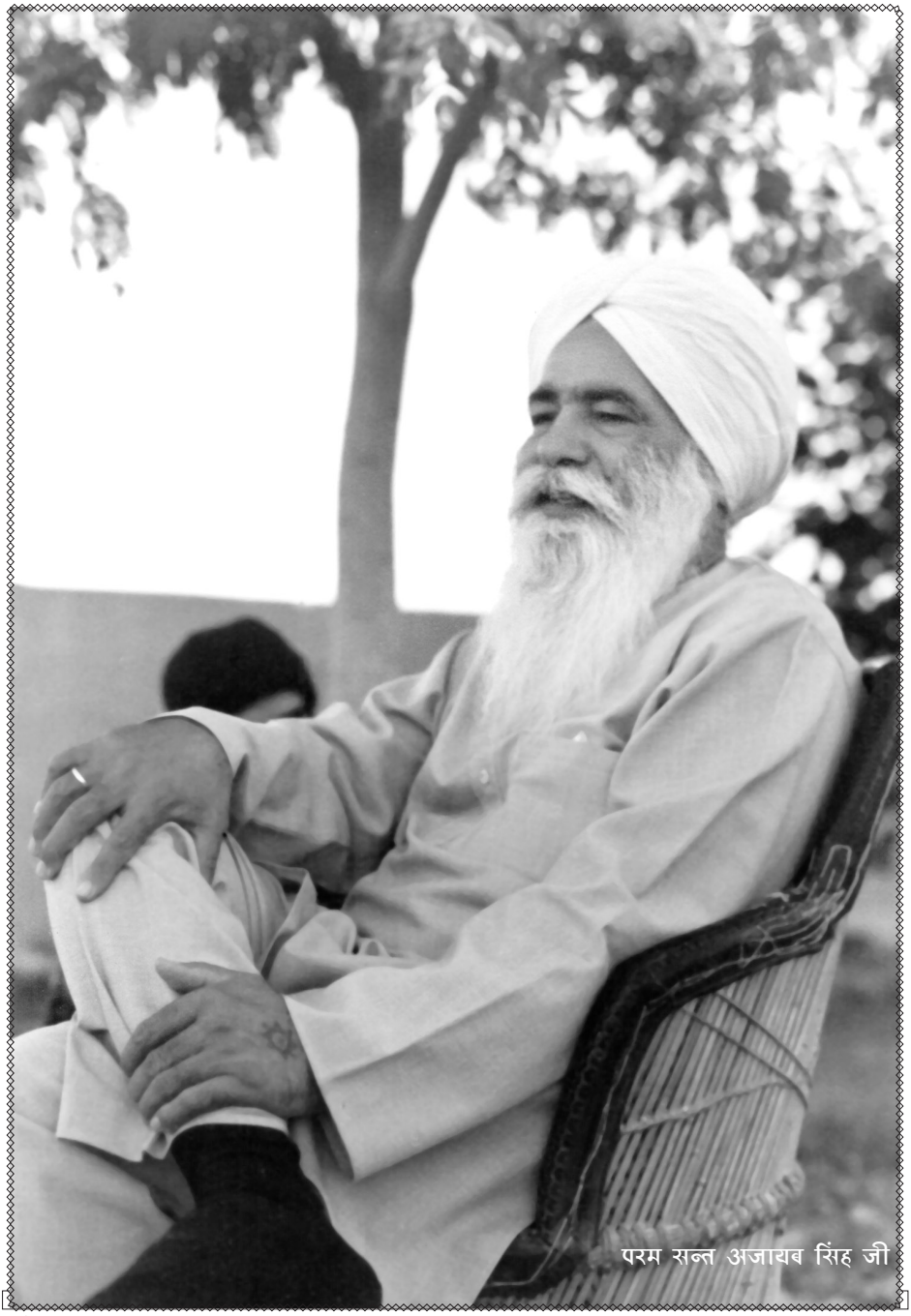

परम सन्त अजायब सिंह जी

का बीज डाल देते हैं। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''पवित्र और बैरागी आत्मा का सन्तों के पास आना इस तरह है जिस तरह खुष्क बारुद को आग के नजदीक कर दें।''

सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइ।।

अब आप कहते हैं, ''हम उस परमात्मा सच को तभी पहचान सकते हैं जब हमें सच्ची शिक्षा मिल जाती है। हम बाहर से ख्याल हटाकर अंदर शब्द के साथ जुड़ जाते हैं।''

दइआ जाणै जीउ की किछु पुंनु दानु करेइ।।

सन्त–महात्मा किसी समाज की आलोचना नहीं करते बल्कि कहते हैं कि आप 'नाम' लें। मेहनत करें अंदर जाकर सच्चाई को देखें। जब हम नाम की कमाई करते हैं हमारे अंदर अपने आप ही दया उत्पन्न हो जाती है, दान करने की लालसा पैदा हो जाती है फिर यह भी समझ आ जाता है कि हमारे दान का कौन हकदार है तो हम सही जगह दान देते हैं।

महात्मा न हमारे दान के भूखे हैं और न हमसे मान ही प्राप्त करना चाहते हैं। महात्मा अपना कमाकर खाते हैं और अपने सेवकों से कहते हैं अगर परमात्मा ने आप पर मेहर की है आपको थोड़ा बहुत धन दिया है तो आप ऐसे आदमी की मदद करें जिसे आपकी मदद की जरूरत हो।

आमतौर पर हम यह नहीं समझते कि दया किसे कहते हैं? हम ईर्ष्या में जल रहे होते है हमारा अपना घर जल रहा होता है लेकिन हम दूसरों पर परोपकार करने की सोच रहे होते हैं। पहले अपने ऊपर दया करें अपनी आत्मा को पाँचों डाकुओं से बचाएं फिर दूसरों के लिए सोचें। पहले अपने घर की आग बुझाएं। तुलसी साहब कहते है:

दया धर्म का मूल है, नरक मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िए, जब लग घट में प्राण।।

सचु ताँ परु जाणीऐ जा आतम तीरथि करे निवासु।।

अब आप कहते हैं, ''हम उस सच परमात्मा को जो सदा ही कायम है तभी पहचान सकते हैं जब हम अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतारकर दसवें द्वार में पहुँच जाएं।'' कबीर साहब इसे प्रयाग राज और गुरु अमरदेव जी महाराज सच्चा अमृतसर कहकर बयान करते हैं। जब आत्मा दसवें द्वार में जाकर स्नान करती है तो इसके जन्मों–जन्मों के कर्म कट जाते हैं, यह उज्जवल हो जाती है।

सतिगुरु नो पुछि कै बहि रहै करे निवासु।।

हम सन्तों की मदद से ही दसवें द्वार में पहुँच सकते हैं। सबसे पहले ऐसे महात्मा के पास जाएं जिसने अपनी जिंदगी में इस जगह पर निवास किया हो। हम भी वहाँ निवास कर सकते हैं फिर हमारी आत्मा संसार की तरफ से सोना और परमात्मा की तरफ से जागना शुरू कर देती है।

सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ।।

गुरु साहब कहते हैं, ''दु:खों की दवाई नाम है। जिस तरह हम कपड़े को साबुन से धोकर साफ करते हैं उसी तरह 'नाम' आत्मा के ऊपर लगे हुए पापों को धोकर साफ कर देता है।''

संसार रोगी नाम दारू, मैल लग्गे सच बिना।

नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ।।
दानु महिंडा तली खाकु जे मिलै त मसतकि लाईऐ।।

अब आप राय भौंए को बताते हैं, ''हमें परमात्मा से यह दान माँगना चाहिए अगर हमें कोई कमाई वाला महात्मा मिल जाए तो हम उसके पैरों की राख अपने मस्तक पर लगा लें।'' कूँजों की सार कूँजे ही जानती हैं। हम विषय–विकारों में फँसे हुए लोग महात्माओं को क्या जान सकते है? महात्मा की कद्र महात्मा ही जानते हैं।

कूड़ा लालचु छडीए होइ इक मनि अलखु धिआईऐ।।

अब आप राय भौंए से कहते हैं, ''देख प्यारेया! हम झूठा लालच छोड़कर प्यार से भक्ति करके उस परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं।''

फलु तेवेहो पाईऐ जेवेही कार कमाईऐ।।

अगर हम भक्ति करते हैं तो हमें भक्ति का यह फल मिलता हैं कि परमात्मा हमारे अंदर प्रगट हो जाता हैं और हमें अपने घर में रहने की जगह दे देता है।

जे होवै पूरबि लिखिआ ता धूड़ि तिन्हा दी पाईऐ।।

अगर परमात्मा ने हमारे पूर्वले कर्मों में लिख दिया हो कि आपने महात्मा के चरणों में जाकर भक्ति करनी है तो ही हमें कमाई वाले महात्मा के दर्शन होते हैं और उनके चरणों की धूल नसीब होती है।

मति थोड़ी सेव गवाईऐ।। मति थोड़ी सेव गवाईऐ।।

प्यारेयो! सेवा करनी बहुत आसान है, हम देखा–देखी सेवा कर लेते हैं लेकिन इसे संभालना बहुत मुश्किल है। हम कम बुद्धि वाले लोग लंगर की और भजन–अभ्यास की भी सेवा कर लेते हैं लेकिन हम सेवा दुनिया की आशाएं रखकर करते हैं। हम जानते हैं कि एक ख्वाहिश पूरी हो जाती है तो मन और ख्वाहिशें पैदा कर देता है। जब हमारी ख्वाहिशें पूरी नहीं होती तो हम अभाव ले आते हैं। सेवा करके अहंकार आ जाता है और हम की हुई सेवा को बेकार लेते हैं।

गुरु साहब ने हमें प्यार से समझाया है कि हम अपने जीवन को पवित्र बनाएं, किसी चीज का अहंकार न करें। सब कुछ परमात्मा का दिया हुआ है, परमात्मा की भक्ति करके परमात्मा से मिलाप करें।

● ● ●